शक्ति के स्रोत

प्रदोष कुमार

शक्ति का अर्थ अस्पष्टता के समझने के बाद शक्ति के स्रोतों का अध्ययन किया जा सकता है। वस्तुतः शक्ति अनेक स्रोतों से उत्पन्न होकर विभिन्न रूपों में अपने आप को प्रकट करती है। नेपोलियन, हिटलर, लेनिन,गांधी यह सभी शक्तिशाली थे, लेकिन इनकी शक्ति के स्रोतों में अंतर था शक्ति के स्रोतों की कोई पूर्ण सूची तो देना संभव नहीं है क्योंकि विचारों को मैं इस संबंध में बहुत ही अधिक मतभेद है फिर भी शक्ति के कुछ प्रमुख स्रोतों का उल्लेख निम्न रूप में किया जा सकता ह।

1.ज्ञान:- सती का प्रथम स्रोत ज्ञान होता है ।ज्ञान अपने साधारण आदमी व्यक्ति को अपने लक्ष्य को पुनः प्रबंधित करने और मिलाने की योग्यता प्रदान करता है। ज्ञान द्वारा व्यक्ति अन्य विशेषताओं को इस प्रकार संचालित किया जाता है कि वे शक्ति का साधन बन सके। व्यक्ति के नेतृत्व का गुण उसकी इच्छा शक्ति उसकी सहनशक्ति अपने आप को अभिव्यक्त करने की शक्ति आदि विभिन्न तत्व शक्ति के महत्वपूर्ण पहलू है। इन तत्वों में से किसी भी एक की कमी शक्ति के समस्त रूप को कार्य कुशल बना सकती है और उसे पूरी तरह नष्ट कर सकती है।

2.प्राप्तियाँ:- ज्ञान शक्ति का आंतरिक स्रोत है। इसके आंतरिक शक्ति का निर्धारण करने वाले भारी तत्व भी होते हैं जिनमें प्राप्तियां सर्वाधिक प्रमुख होती है। साधारण बोलचाल के अंतर्गत इसे ही आर्थिक शक्ति का नाम दिया जा सकता है। राज्यों के अंतर्गत भौतिक सामग्री स्वामित्व एवं सामाजिक सामग्री की शक्ति एक व्यक्ति को समाज प्राप्त स्थिति और स्तर, आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। संपत्ति शक्ति का एक स्रोत है लेकिन ना तो यह एकमात्र स्रोत है और ना ही निश्चित रूप से प्रभाव डालने वाला स्रोत है बिना संपत्ति के भी एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के कार्यों को प्रभावित कर सकता है और संपत्ति के होने पर भी आवश्यक नहीं है कि वह दूसरे के कार्यों को प्रभावित कर सकेगा।

Scanned with CamScanner

3.संगठन:- संगठन अपने आप में शक्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। कहावत भी है कि **संगठन ही शक्ति** है विभिन्न प्रतिद्वंद्विता पूर्ण इकाइयां आपस में मिलकर संघ बना लेती है तो उसकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है आधुनिक युग के मजदूर संघ तथा व्यापारी संघ इसके उदाहरण हैं शक्ति की दृष्टि से सबसे बड़ा संघ अस्पष्ट तैयार आज यही है और इसका एक प्रमुख कारण राज्य का सर्वाधिक संगठित स्वरूप ही है।

4. आकार :-अनेक बार आकार को शक्ति का परिचायक माना जाता है और यह सोच लिया जाता है कि एक संगठन का जितना बड़ा आकार होगा उसके द्वारा उतनी ही अधिक शक्ति का परिचय दिया जा सकता है। आकार के साथ यदि संगठन का मेल हो तो ऐसा होता भी है लेकिन सभी परिस्थितियों में ऐसा नहीं होता अनेक बार ऐसा होता है कि उसका बड़ा आकार उसे उलझा देता है उसे और संतुलित कर देता है और उसे परिस्थितियों के अनुकूल नहीं रहने देता है इसी कारण अनेक बार कुछ राजनीतिक दलों द्वारा अपने आकार को घटाने के लिए शुद्ध आंदोलनों का आश्रय लिया जाता है ।

शक्ति के स्रोत एवं आधार के रूप में विश्वास का भी पर्याप्त महत्व है तलवार की शक्ति भी अंतिम रूप से विश्वास पर ही आधारित होती है ।शक्ति का एक अन्य स्रोत सता है शक्ति की महानता इस बात से निर्धारित की जाती है कि वह मानव मस्तिष्क पर प्रभाव डालने में कितना सक्षम है। **प्रोफेसर मैकाइवर** ने शक्ति के इन विभिन्न तत्वों का वर्णन करने के बाद कहा है कि **"शक्ति की कार्य कुशलता उन विभिन्न परिस्थितियों के द्वारा बढ़ती या कम होती है जिनके अधीन उसे कार्य करना होता है।"**

Scanned with CamScanner